प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर – 331 403

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

सजल नेत्रों से आचार्य महाप्रज्ञ को विदाई
राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार

सरदारषहर 10 मई।

जगत में अहिंसा की अलख जगाने वाले आचार्य महाप्रज्ञ को अंतिम विदाई देने सोमवार को देशभर से श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा। तेरापंथ की राजधानी सरदारशहर में श्रद्धालुओं ने अपने मार्गदर्शक महाप्रज्ञ को सजल नेत्रों से अंतिम विदाई दी।

आचार्य महाप्रज्ञ का अंतिम संस्कार शाम करीब साढ़ छह बजे रतनगढ़ रोड स्थित श्री संपत बच्छावत के खेत में राजकीय सम्मान से किया गया। उन्हें मुखाग्नि जैन समाज की धार्मिक नीतियों के अनुसार टमकोर के पारिवारिक सदस्यों ने दी। इस दौरान राज्य के गृहमंत्री श्री शांतिलाल धारीवाल ने कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी के शोक संदेश का वाचन किया।

मैंने दो गुरुओं का वियोग सहा – आचार्य महाश्रमण

आचार्य महाश्रमण ने पत्रकारों से बातचीज में कहा आचार्य महाप्रज्ञ के चिंतन और मनन को यथोचित रूप में आगे बढ़ाया जाएगा। साधु–संतों और साध्वियों की साधना अच्छी तरह से चले उस पर ध्यान दिया जाएगा। मैंने अपने जीवन में दो गुरुओं का वियोग सहा है। पहला आचार्य तुलसी और दूसरा आचार्य महाप्रज्ञ। गुरुओं की शिक्षा और संदेश हमें अपने जीवन को मोक्षमार्ग पर ले जाने की प्रेरणा देते हैं। आगे क्या लक्ष्य रहेगा, यह अभी बताना मुश्किल है। लेकिन आचार्य महाप्रज्ञ के अधूरे कार्यों को पूरा करना मेरी प्राथमिकता होगी। आचार्य महाप्रज्ञ के आदर्श वाक्य 'रहें भीतर, जिओ बाहर' ने मुझे सदैव प्रेरणा दी है। मेरा समाज को संदेश है कि अहिंसा, संयम और नैतिकता समाज में प्रतिष्ठित होती रहे।

हमने खोया महान संत – डॉ. अब्दुल कलाम

महाप्रज्ञ ने अणुव्रत और अहिंसा के माध्यम से इंसानियत को बढ़ावा दिया। देश ने एक महान संत खो दिया।

पूरे राष्ट्र की क्षति – सोनिया गांधी

महाप्रज्ञ का महाप्रयाण जैन समाज और तेरापंथ के लिए ही नहीं बल्कि पूरे देश के लिए न भरी जाने वाली क्षति है।

नारियल चढ़ाने की होड़

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के अंतिम संस्कार के दौरान उनके अनुयायियों में नारियल चढ़ाने की होड़ मच गई। श्रद्धालुओं की भीड़ बढ़ने पर अन्तेष्टि स्थल में लगाई गई बैरिकेटिंग टूट गई। यहां पर काबू करने के लिए पुलिस को बल प्रयोग भी करना पड़ा। उनकी बैकुंठी श्रीसमवसरण से शुरू होकर घण्टाघर, सभा भवन, नवनिर्मित महाप्रज्ञ भवन से होते हुए रतनगढ़ रोड स्थित समाधि स्थल पर पहुंची।

रातभर चला णमोकार मंत्र का जाप

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के महाप्रयाण के बाद श्रीसमवसरण में श्रद्धालुओं ने रातभर णमोकार मंत्र का जाप किया। कई श्रद्धालु भजन कीर्तिन में जुटे रहे। यह सिलसिला अंतिम यात्रा तक चलता रहा। इस बीच संत महाप्रज्ञ के ज्ञान की विशाल थाती पर भी चिंतन मनन करते रहे।

इन हस्तियों ने किए अंतिम दर्शन

तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें आचार्य महाप्रज्ञ को श्रद्धासुमन अर्पित करने सोमवार को यहां श्रीसमवसरण में श्रद्धालुओं का रैला उमड़ पड़ा। सुबह आठ बजे से शुरू हुई श्रद्धांजलि सभा अपराह्न तीन बजे तक चली। इस दौरान पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम से लेकर अनेक हस्तियों ने महाप्रज्ञ के अंतिम दर्शन किए। महाप्रज्ञ को श्रद्धासुमन अर्पित करने वालों में पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम, मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, पूर्व मुख्यमंत्री व भाजपा की राष्ट्रीय महासचिव वसुंधरा राजे, केन्द्रीय पंचायतराज एवं ग्रामीण विकास मंत्री डॉ. सी.पी. जोशी, केन्द्रीय भूतल एवं परिवहन राज्यमंत्री महादेवसिंह खंडेला, राज्य के गृहमंत्री शांति धारीवाल, शिक्षा मंत्री भंवरलाल मेघवाल, सार्वजनिक निर्माण मंत्री प्रमोद जैन भाया, कृषि विपणन राज्य मंत्री गुरमितसिंह कुन्नर, पूर्वमंत्री घनश्याम तिवाड़ी, कालीचरण सर्राफ, राजेन्द्र राठौड़, सांसद रामसिंह कस्वां, राज्यसभा सांसद नरेन्द्र बुडानिया, पूर्व सांसद सुभाष महरिया, विधायक राजकुमार रिणवां, विधायक अशोक पींचा, हाजी मकबूल मंडेलिया और पूर्व विधायक चन्द्रशेखर बैद, पूर्व मंत्री पं. भंवरलाल शर्मा, आईएएसई विश्वविद्यालय के कुलपति मिलाप दुगड़, कुबेर ग्रुप के मूलचन्द मालू, और पूर्व संसदीय सचिव हमीदा बेगम समेत कई वरिष्ठ नेताओं ने सरदारशहर पहुंचकर महाप्रज्ञ को श्रद्धासुमन अर्पित किए। उन्होंने महाप्रज्ञ के निधन को देश के लिए अपूरणीय क्षति बताया। इसके अलावा वरिष्ठ प्रशासनिक व पुलिस के नौकरशाहों में दिल्ली के प्रमुख सचिव एस. रघुनाथन, वरिष्ठ आईएएस एस अहमद तथा बीकानेर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक दलपतसिंह दिनकर आदि भी श्रद्धासुमन अर्पित करने वालों में शामिल थे। चुरू के जिला कलेक्टर डॉ. के.के. पाठक व पुलिस अधीक्षक निसार अहमद व एसडीएम लोकेश सहल श्रीसमवसरण में व्यवस्थाओं पर निरंतर नजर रखे हुए थे।

थम सा गया आसमां

अतुलनीय संत महाप्रज्ञ की विदाई के समय सोमवार शाम को एकबारगी आसमां भी ठहर सा गया। ऐसा लगा मानो सूर्य भी अपना रथ थामकर संसार में आध्यात्मिकता की रोशनी फैलाने वाले संत को श्रद्धासुमन अर्पित कर रहा है।

अंत्येष्टि का जब धुंआ उठा तो एक क्षण तो हर कोई ठहर सा गया, लेकिन अगले ही क्षण आसमां गुरुदेव के जयकारों से गूंज उठा। हर तरफ जब तक सूरज चांद रहेगा.... महाप्रज्ञ का नाम रहेगा की गूंजी सुनाई देने लगी। लाखों श्रद्धालुओं ने हाथ उठाकर जयघोष

किया। अत्येष्टि में शामिल होने के लिए देश के कोने–कोने से श्रद्धालु सपरिवार सरदारशहर आए। नेपाल, भूटान सहित विदेशों से भी लोग अंत्येष्टि में शामिल हुए। कस्बे की सभी धर्मशालाएं और होटल फुल रहे।

16 घंटे में तैयार हुई बैकुंठी

61 चांदी के खंडी लगाकर 15 खाती व सात टेलर ने किया तैयार

आचार्य महाप्रज्ञ की बैकुंठी को तैयार करने में करीब 16 घंटे का समय लगा। समाजसेवी पूनमचन्द लूणियां की देखरेख में रविवार रात आठ बजे से बैकुंठी बनाने का कार्य शुरू हुआ जो सोमवार 12 बजे तक चला। सात फीट लंबी व सात फीट ऊंची बैकुंठी तैयार करने में 15 खाती व सात टेलर लगाए गए। बैकुंठी को सजाने के लिए नवासी फरी लगाई गई थी, जो चीड़ की ईस से बनाई गई थी। बैकुंठी को साटीन के कपड़े से सजाया गया था जिसमें चांदी के 61 खंडी लगाए गए। बैकुंठी पर 36 मीटर कपड़ा लगा तथा इस पर केसर से स्वास्तिक बनाया गया। इसी प्रकार इसमें एक किलो कच्ची सूत व चार किलो पीनी रूई काम में ली गई।

हजारों कंठ बोल रहे थे ओम णमो अरिहंताणं

आचार्य महाप्रज्ञ के अंतिम दर्शन के लिए उमड़े जन सैलाब की आंखों से आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे। प्रचंड गर्मी में खड़े लोगों के चेहरे पर थकान या शिकन का नामोनिशान नहीं था। लोगों के चेहरे पसीने से कम और आंसुओं से ज्यादा भीगे हुए थे। हजारों की तादाद में मौजूद महिलाएं और महाप्रज्ञ के अनुयायी भावविह्वल थे। समवसरण के बाहर लोगों की अथाह भीड़ में ज्यादातर लोगों को महाप्रयाण यात्रा शुरू होने के बाद तक अंदर जाने का सौभाग्य नहीं मिल पाया। लोगों को इससे काफी निराशा भी हुई क्योंकि वे गुरुदेव के अंतिम दर्शन नहीं कर पाए थे। पर बाद में उन्होंने महाप्रयाण यात्रा के दौरान महाप्रज्ञ की बैकूंठी के दर्शन कर मन को तृप्त किया। पहले दर्शन करने की आपाधापी में कई महिलाएं, बुजुर्ग और बच्चे गिर भी गए। चारों ओर 'ओम णमो अरिहंताणं' गूंजता रहा।

अंतिम दर्शनों के लिए लगी होड़

आचार्य महाप्रज्ञ के अंतिम दर्शनों के लिए रविवार से ही जनसैलाब उमड़ने लगा था। समवसरण के बाहर सोमवार को अलसुबह ही लोगों का तांता लग गया। कोई अव्यवस्था ना हो इसके लिए रस्सियां बांधी गई थी। लेकिन करीब सवा लाख से ज्यादा की भीड़ को काबू करना मुश्किल था। समवसरण में जाने के लिए एक ही रास्ता होने के चलते दर्शनों के लिए उतावले लोगों के बीच कई बार धक्कामुक्की हुई। भीड़ को काबू करने के लिए मुख्य द्वार को कई बार बंद भी करना पड़ा। मुख्यद्वार खुलते ही अंदर जाने की आपाधापी में कई बुजुर्ग, महिलाएं और बच्चे भीड़ में फंसकर गिर पड़े। पुलिस ने भी व्यवस्था संभाली। समवसरण के बाहर खड़े लोग बराबर आचार्य महाप्रज्ञ का जयघोष कर रहे थे।

महाप्रज्ञ ने तेरापंथ धर्मसंघ को विश्वपटल पर स्थापित किया।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि सहस्र शताब्दियों के बाद ऐसे महापुरुष का जन्म होता है। आचार्य महाप्रज्ञ ने संपूर्ण मानव जाति का कल्याण किया। साथ ही तेरापंथ धर्म संघ को विश्वपटल पर भी स्थापित किया।

महाप्रज्ञ की अनुपम कृति भी बोली

आचार्य महाप्रज्ञ की अनुपम कृति मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने कहा कि आज मेरी वाणी विराम दे रही है। लेकिन मैं बहुत कुछ कहना चाहती हूं पर मुझे लगता है कि मेरे शब्द अभिव्यक्त नहीं हो पाएंगे। साध्वी ने काव्य पंक्तियों के जरिए अपनी भावना व्यक्त की।

मुख्यमंत्री ने की आचार्य महाश्रमण से लंबी चर्चा

महाप्रज्ञ कें अंतिम दर्शनों के लिए आए मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और आचार्य महाश्रमण के बीच काफी देर तक चर्चा होती रही। मुख्यमंत्री ने महाश्रमण को बताया कि आज हमने बीपीएल परिवारों को अनाज दो रुपये किलो देना शुरू कर दिया है। यह एक ऐसा अनूठा संयोग है कि मानवता के मसीहा आचार्य महाप्रज्ञ चाहते थे कि कोई भी व्यक्ति भूखा न सोए। उन्हीं की इच्छा उनके महाप्रयाण पर पूरी हो गई है। महाश्रमण ने मुख्यमंत्री से कहा कि राजनीति में नैतिकता का समावेश रहे तो सारे काम अच्छे ही होते चले जाएंगे। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष सोनिया गांधी द्वारा संवेदना–संदेश भेजे जाने की जानकारी दी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा यात्रा द्वारा जन–जन में अहिंसा की अलख जगाकर अनूठा काम किया है। उनके 80 वर्ष के संयम पर्याय में की गई एक लाख किलोमीटर से भी ज्यादा की यात्रा इस बात की साक्षी है कि वे अपने आपमें एक महान संत थे।

हमने महापुरुष खो दिया : आचार्य महाश्रमण

आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाण यात्रा से पहले आचार्य महाश्रमण ने अपने प्रथम संबोधन में कहा कि रविवार को हमने एक महापुरुष को खो दिया और इसके साथ ही एक युग का अंत हो गया। स्थूल रूप से हम सब जानते हैं कि यह एक नीयति है। महाश्रमण ने कहा कि विनीत शिष्य वही है जो गुरु का अनुसरण करे। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने आचार्य तुलसी का अनुसरण करते हुए वैसे ही अचानक इस देह का त्याग दिया।

पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे संबोधन के दौरान भावुक हो गई उन्होंने कहा मुझ पर आचार्य महाप्रज्ञ का सदा स्नेह और आशीर्वाद रहा। शांतिदूत और अहिंसा के पुजारी का जाना हमारे लिए अपूर्णीय क्षति है।

पूर्व शिक्षा मंत्री बीडी कल्ला ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ धार्मिक अनेकता के बीच एकता के पैरोकार थे। आचार्य महाप्रज्ञ ने प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान के रूप में ऐसा पाठ्यक्रम दिया है जो प्राथमिक और उच्च शिक्षा के कोर्स में शामिल किया जाना चाहिए। प्रेक्षाध्यान के फायदे उन्हें व्यक्तिगत जीवन में मिले हैं। ऐसे विश्वसंत का जाना हमारे लिए अपूर्णीय क्षति है।

आखिरी झलक

हैलीकॉप्टरसे बरसाए सिक्के

आचार्य महाप्रज्ञ की अंतिम यात्रा के दौरान हैलीकॉप्टर से चांदी का सिक्का, ऊं और आध्यात्मिक चिन्ह के सिक्के बरसाए गए। महाप्रयाण यात्रा में शामिल लोगों में यह कौतुलह का विषय बना रहा।

आचार्य महाश्रमण के दर्शनों की होड़

आचार्य महाश्रमण से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए रविवार रात से ही देशभर से आए श्रावक–श्राविकाओं का सोमवार को भी तांता लगा रहा। आचार्य महाश्रमण ने सोमवार दोपहर करीब 12 बजे तक श्रावक–श्राविकाओं से मिलकर उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया। आचार्य महाश्रमण 12.50 बजे मंच पर आ गए।

सभी धर्मों के लोग आए

आचार्य महाप्रज्ञ के अंतिम दर्शन करने के लिए समवसरण में देश के कोने–कोने से सभी धर्मों व जाति के लोग आए। समवसरण में सभी धर्मों के लोग व्यवस्थाएं संभाले हुए थे।

तिल धरने की जगह नहीं बची

महाप्रज्ञ के महाप्रयाण यात्रा में शामिल होने के लिए देश–विदेश से लोगों का सोमवार को सरदारशहर आवागमन रहा। ऐसे में ताल मैदान के अलावा अन्य खाली स्थानों पर गाड़ियों की कतारें लग गई।

बड़ी संख्या में प्रवासी भी पहुंचे

महाप्रज्ञ के निधन का समाचार सुनकर मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, दिल्ली, सूरत, पूना, हैदराबाद सहित विभिन्न महानगरों में रह रहे चुरू व झुंझुनूं जिले के प्रवासी भी सरदारशहर पहुंच गए।

नहीं हो सकी मुनि की मनोकामना पूरी

नहीं कर सके मुनि जयंतकुमार महाप्रज्ञ को पुस्तक भेंट

जन्म दिन पर देना था विशेष उपहार

सालों की साधना के बाद भी उसे उसका इच्छित फल ना मिले तो मन पर क्या गुजरती है वह तो वो ही जान सकता है। ऐसा ही कुछ आचार्य महाप्रज्ञ के शिष्य मुनि जयंतकुमार के साथ हुआ। मुनि जयंत आचार्य महाप्रज्ञ के देवलोकगमन से पहले रविवार प्रातःकाल ही प्रतिलेखन के समय आचार्य महाप्रज्ञ से मिले। मुनि जयंत ने महाप्रज्ञ से निवेदन किया कि अब तक मीडिया में प्रसारित होने वाले आपके लेख 125 की संख्या पार कर चुके हैं। इन लेखों में

से ही मैंने दो पुस्तकें आपके लिए तैयार की है। जो मैं आपको आपके इस बार आने वाले जन्मदिन पर भेंट करना चाहता हूं। मैंने जो उन पुस्तकों के नाम दिए हैं उनमें पहली पुस्तक का नाम जो 'सहता है वही रहता है' व दूसरी पुस्तक का नाम 'कैसे हो समाधान' है। मुनि ने महाप्रज्ञ को बताया कि ये बात आज तक मैंने कभी भी किसी को नहीं बताई। पता नहीं आज ही मेरा क्यों मन कर रहा है कि मैं आपको यह बात आज बता दूं। इस पर महाप्रज्ञ ने कहा कि मुनि आपके दोनों शीर्षक बहुत अच्छे हैं, दोनों पुस्तकें जल्द से जल्द तैयार करवाओ। मुनि जयंत ने ये पुस्तकें महाप्रज्ञ को उनके जन्मदिन पर भेंट करने के लिए तैयार की थीं। उन्होंने बताया कि मैंने सोचा था कि दोनों पुस्तकें मैं महाप्रज्ञ को समर्पित कर दूंगा, मगर मेरी मनोकामना मन में ही रह गई। दोनों पुस्तकों का सारा मैटर कंपोज भी हो चुका था। बस कुछ ही दिनों में वे पूरी हो जाने वाली थी। **(साभार – दैनिक भास्कर)**

शीतल जैन

(मीडिया संयोजक)

संलग्न फोटो – महाप्रयाण यात्रा (10 मई,2010)